दस सोपानिय परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था स्वरूप शोध

स्रोत – मध्यस्थ दर्शन - सह अस्तित्ववाद

प्रणेता – श्रद्धेय श्री ए. नागराज, अमरकंटक

सन्दर्भ वांगमय

दर्शन

मानव व्यवहार दर्शन
मानव अनुभव दर्शन
मानव अभ्यास दर्शन
मानव कर्म दर्शन

वाद

समाधानात्मक भौतिकवाद
व्यवहारात्मक जनवाद
अनुभवात्मक आध्यात्मवाद

शास्त्र

व्यवहारवादी समाज शास्त्र
आवर्तनशील अर्थचिंतन
मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

अन्य

परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य योजना
परिभाषा संहिता
मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या
विकल्प एवं अध्ययन बिंदु

व्यवस्था – मानवत्व सहित वर्तमान परंपरा, वर्तमान में स्थिरता निश्चयता निरंतरता, सार्वभौम व्यवस्था परिवार मूलक दश सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी, वर्तमान में विश्वास।

- मानवीय आचरण, संस्कृति एवं सभ्यता पूर्ण व्यवहार परंपरा वर्तमान में होना रहना।
- विधि के आशय को कार्यरूप में प्रदान करने हेतु प्रस्तुत परम्परा ही व्यवस्था है।
- व्यवहार गति में स्थायित्व, निरंतरता और वर्तमान में विश्वास।

परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था – जागृत मानव परिवार में कम से कम दस व्यक्तियों का होना स्वीकार होता है। ऐसे परिवार में से एक व्यक्ति को व्यवस्था के लोकव्यापीकरण करने के उद्देश्य से दस व्यक्ति निर्वाचित करते हैं स्वयं भी अपने को निर्वाचित कर लेता है इस प्रकार दस व्यक्तियों में से एक व्यक्ति व्यवस्था में भागीदारी करने के लिए तैयारी करता है। यही प्रथम जन प्रतिनिधि सभा है। इसी प्रकार से पूरे गाँव में, पूरे देश में, पूरे विश्व में मानवीय शिक्षा संस्कारपूर्वक जागृति के लिए वांछित ज्ञान विवेक विज्ञान सहज संस्कार स्थापित किया जाना होता है।

परिवार – संबंधों का संबोधन व्यवहार सीमा व मर्यादा समाधान सहित सहज प्रमाण।

– जन्म सम्बन्ध अर्थात् सीमित व्यक्तियों का समुदाय जिसमें प्रत्येक व्यक्ति मानवीयता पूर्ण आचरण करते हुए सम्बन्धों व मूल्यों की पहचान व निर्वाह पूर्वक परस्पर भौतिक समृद्धि, बौद्धिक समाधान के लिए पूरक हैं।

परिवार सभा – हर परिवार अपने में अखण्ड समाज के अंगभूत होने मानव संस्कृति सभ्यता सहज रूप के प्रमाण में परिवार है और सार्वभौम व्यवस्था के अनुरूप कार्य करने के आधार पर सभा है। हर जागृत मानव परिवार सार्वभौम व्यवस्था अखण्ड समाज सूत्र व्यवस्था के अनुसार जीने की स्थिति में ही संस्कृति सभ्यता विधि व्यवस्था का प्रमाण होना पाया जाता है।

दस सोपानिय परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था – क्यों ?

- अपराध के अभाव में आशा का प्रत्यावर्तन, अन्याय के अभाव में विचार का प्रत्यावर्तन, आसक्ति के अभाव में इच्छा का प्रत्यावर्तन तथा अज्ञान के अभाव में संकल्प का प्रत्यावर्तन होता है।

  ★ अत: अपराधहीन व्यवहार के लिए व्यवस्था का दबाव एवं प्रभाव, अन्यायहीन विचार के लिए सामाजिक आचरण का प्रभाव, आसक्ति रहित इच्छा के लिए अध्ययन एवं संस्कार का प्रभाव तथा अज्ञान रहित बुद्धि के लिए अन्तर्नियामन अथवा ध्यान आवश्यक है, जिससे ही प्रत्यावर्तन क्रिया सफल है। ध्यान का अर्थ समझने के लिए मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि को केन्द्रित करना और समझने-अनुभव करने के उपरांत प्रमाणित करने के लिए मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि को केंद्रित करना। अर्थबोध होने के लिए तथा अर्थ बोध को प्रमाणित करने के लिए ध्यान होना आवश्यक है। यही ध्येय है। सर्वमानव ध्याता है ।

- अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि मानवीयतापूर्ण व्यवस्था, सामाजिक आचरण, अध्ययन और संस्कार के साथ ही अंतर्नियामन आवश्यक है, जिससे चरम विकास (जागृति) की उपलब्धि संभव है।

मध्यस्थ दर्शन – अध्ययन बिन्दु

उद्देश्य –

- जीव चेतना से मानव चेतना में गुणात्मक परिवर्तन हेतु
- मानवीयता सहज आचरण प्रमाण हेतु
- सर्वतोमुखी समाधान-समृद्धि सहित अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था रूप में प्रमाण हेतु

*** वर्तमान स्थिति ***

* धरती ताप ग्रस्त *

* प्रदूषण *

* सभी मानव समुदाय असुरक्षित *

*** आवश्यकता ***

* धरती संतुलित रहना *

* ऋतु संतुलित बना रहना *

* धरती पर मानव का अक्षुण्ण रहना *

दस सोपानिय परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था – क्या?

सर्वशुभ का स्वरूप हर मानव परिवार में प्रत्येक नर-नारी समझदारी से सम्पन्न होना एवं समाधान समृद्धि को प्रमाणित करना है। इस विधि से समृद्धि व्यवस्था का परिणाम है। व्यवस्था पूर्वक श्रम नियोजन, श्रम नियोजन पूर्वक उत्पादन, उत्पादन के आधार पर समृद्ध होना देखा गया है। इसी प्रकार से हर परिवार को प्रमाणित होना आवश्यक है। पहले मंजिल के रूप में हर परिवार ही अपने वैभव का प्रमाण है। इसका स्वरूप समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी, समाधान समृद्धि है।

इस क्रम से जीने, समझने, प्रमाणित होने के संयुक्त स्वरूप को परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था नाम दिया है। व्यवस्था का द्वितीय सोपान परिवार समूह सभा है। इसमें

दस सोपानिय परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था – कैसे?

विषय–सूची

अध्याय		पृष्ठ संख्या
१.	भूमिका एवं अवधारणा ।	१
२.	ग्राम स्वराज्य व्यवस्था के लिए पूर्व तत्परता एवं आकलन ।	७
३.	ग्राम स्वराज्य व्यवस्था की अवधारणा ।	१२
४.	ग्राम स्वराज्य व्यवस्था के सार्वभौम सूत्र व्याख्या और उसके स्रोत ।	१६
५.	ग्राम स्वराज्य सभा ।	१९
६.	ग्राम शिक्षा संस्कार व्यवस्था ।	२७
७.	ग्राम उत्पादन कार्य व्यवस्था ।	३२
८.	ग्राम स्वायत्त सहकारी विनिमय कोष व्यस्वथा ।	३९
९.	ग्राम स्वास्थ्य संयम व्यवस्था ।	४३
१०.	ग्राम न्याय सुरक्षा व्यवस्था ।	४५
११.	मूल्यांकन, प्रोत्साहन नियंत्रण प्रक्रिया ।	५५
१२.	उपसंहार ।	५९

दस सोपानिय परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था – कितना ?

अध्याय-५

ग्राम स्वराज्य सभा

ग्राम का प्रत्येक परिवार दस (१०) व्यक्तियों के स्वरुप में होगा। यदि किसी परिवार में दस से कम व्यक्ति हैं तो वह अपने परिवार के निकटस्थ, अन्य परिवारों से मिलकर, एक परिवार सभा का गठन करेंगे। परिवार का प्रत्येक सदस्य बच्चे व वयस्क मिलकर परिवार – सभा का गठन करेंगे। परिवार सभा के सब सदस्य मिलकर एक ऐसे व्यक्ति को प्रधान के रुप में चुनकर परिवार समूह सभा के लिए निर्वाचित करेंगे जो "जीवन–विद्या" व "वस्तु–विद्या" में सर्वाधिक पारंगत होंगे। यदि किसी परिवार-सभा में दस से अधिक व्यक्ति हैं तो वह दस के गुणांक में अपने प्रधान (एक से अधिक) परिवार समूह सभा के लिए चुनकर भेजेंगे। दस के गुणांक के बाद ५ से अधिक शेष होने पर एक और प्रधान को चुना जाएगा। ५ से कम होने पर नहीं।

इस प्रकार १० परिवारों के प्रधानों से मिलकर एक "परिवार समूह सभा" का गठन किया जायेगा। ऐसे प्रत्येक १० "परिवार समूह सभा" से एक व्यक्ति को, ग्राम-सभा के लिए निर्वाचित करेगा। इसी प्रकार १० परिवार समूहों से निर्वाचित १० सदस्य, ग्राम-सभा का गठन करेंगे, जिसमें से एक ग्राम सभा का प्रधान होगा। सामान्यतः सौ परिवार मिलकर एक "ग्राम स्वराज्य सभा" का गठन करेंगे जिसमें १० निर्वाचित सदस्य होंगे। यदि किसी ग्राम में १०० (एक सौ) परिवार से ज्यादा जन संख्या है तो उसी १० के गुणांक में उस ग्राम सभा के सदस्य होंगे। उदाहरण के लिए यदि गांव की जन संख्या २००० (दो हजार) है तो उस "ग्राम सभा" में २० सदस्य होंगे।

कालान्तर में उपर्युक्त व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक ग्राम सभा के निर्वाचित सदस्य अपने दस सदस्यों में से एक सदस्य को "ग्राम समूह सभा" में, ग्राम समूह सभा के दस सदस्य एक को, ग्राम क्षेत्र सभा, ग्राम क्षेत्र सभा के दस सदस्यों में से एक सदस्य को मंडल सभा, मंडल सभा के १० सदस्यों में से एक सदस्य को "मंडल समूह सभा" मंडल समूह-सभा के दस सदस्यों में से एक सदस्य को "मुख्य राज्य सभा", मुख्य राज्य सभा के दस सदस्यों में से एक सदस्य को "प्रधान राज्य सभा" व प्रधान राज्य सभा के दस सदस्यों में से एक सदस्य को "विश्व राज्य सभा" के लिए निर्वाचित करेंगे। इस प्रकार प्रत्येक स्तर (**Level**) में प्रत्येक व्यक्ति सिर्फ १० व्यक्तियो का मूल्यांकन कर अगली सभा के लिए सदस्य निर्वाचित करेंगे।

मध्यस्थ दर्शन की रौशनी में मानवीय व्यवस्था के ऐतिहासिक तथ्य

- मानव समाज के चार आयाम = संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था
- मानवीय परंपरा के चार आयाम = शिक्षा, आचरण, संविधान, व्यवस्था
- मानवीय व्यवस्था के पांच आयाम = शिक्षा-संस्कार, स्वास्थ्य-संयम, उत्पादन-कार्य, विनिमय-कोष, न्याय-सुरक्षा
- मानव की पांच स्थिति = व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्र
- मानवीय व्यवस्था के साधन = मानवेतर प्रकृति सहित धरती सहित सर्व मानव का तन, मन, धन
- व्यवस्था के एकरूपता, एकात्मकता, एकसूत्रता सूत्र = प्रक्रिया, पद्धति, नीति, प्रणाली
- मानव आकांक्षा = समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व
- लोकाकांक्षा = जन बल कमाना, यश बल कामना, धन बल कामना
- मानव के चार आयाम = अनुभव, विचार, व्यवहार, व्यवसाय
- मानव में दर्शन का स्वरुप = यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता

प्रथम सोपान – परिवार सभा

- कम से कम 10 सदस्य, तीन पीढ़ी का एक साथ
- परिवार ही मूलतः सभा है
- सभा ही परिवार के रूप में है
- निर्णय लेने के रूप में सभा, क्रियान्वयन के रूप में परिवार कहलाता है
- परिवार में संवाद अवसंभावी, एक दुसरे की मानसिकता, प्रायोजन, फल परिणाम का बोध होना
- निर्णय सर्व सम्मति से
- सभी मुद्दे समझदारी से शुरुवात होते हुए प्रमाणीकरण तक लम्बाई चौड़ाई होना पाया जाता है
- परिवार में अनुभव की महिमा - समझदारी और प्रमाणीकरण की वस्तु एक ही है, वह है - सहअस्तित्व
- सहअस्तित्व स्वभावगति सहज सहअस्तित्व की खुशबु अनुभव मूलक विधि से व्यवस्था के सभी कड़ियों में सहअस्तित्व नजरिया
- समाधान, समृद्धि पूर्ण परिवार, रहस्य मुक्त परिवार

द्वितीय सोपान – परिवार समूह सभा

- दश परिवार से निर्वाचित एक एक सदस्य एकत्रित आना
- एक दुसरे की पहचान जागृत परिवार विधि से
- दो प्रधान कार्य - 1) 10 परिवार में संतुलन = न्याय पूर्वक जीने की कला को उज्जवल बनाना 2) 10 परिवारों में पूरकता को बनाये रखना
- हस्त शिल्प, ग्राम शिल्प, कविता, साहित्य, कृषि एवं कुटीर उदयोग में प्रोत्साहन बनाये रखना. ऐसी कलाओं के निखारने के लिए सोचना, कार्यक्रम निजोजित करना. इस प्रकार दस परिवारों के सौभाग्य का निखर हर दिन, महीना, वर्ष श्रेष्ठता की और शोध होना स्वाभाविक रहेगा
- यह दुसरे सोपान का वैभव हुआ
- अपने अपने परिवार में समृद्धि के प्रमाण रूप में समाज गति के दुसरे सोपान के सौभाग्य में भागीदारी करेंगे

द्वितीय सोपान – परिवार समूह सभा

सर्वशुभ का स्वरूप हर मानव परिवार में प्रत्येक नर-नारी समझदारी से सम्पन्न होना एवं समाधान समृद्धि को प्रमाणित करना है। इस विधि से समृद्धि व्यवस्था का परिणाम है। व्यवस्था पूर्वक श्रम नियोजन, श्रम नियोजन पूर्वक उत्पादन, उत्पादन के आधार पर समृद्ध होना देखा गया है। इसी प्रकार से हर परिवार को प्रमाणित होना आवश्यक है। पहले मंजिल के रूप में हर परिवार ही अपने वैभव का प्रमाण है। इसका स्वरूप समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी, समाधान समृद्धि है।

इस क्रम से जीने, समझने, प्रमाणित होने के संयुक्त स्वरूप को परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था नाम दिया है। व्यवस्था का द्वितीय सोपान परिवार समूह सभा है। इसमें

तृतीय सोपान – ग्राम परिवार सभा

दसो परिवार संस्कृति सभ्यता में एक रूपता को बनाए रखेंगे। कला और उत्पादन क्रियाओ के प्रोत्साहन से अपनी अपनी पहचान बनाए रखने में सतत स्वयं स्फूर्त विधि से सम्पन्न होते जायेंगे। इस स्वायत्ता को पहचानने के उपरान्त सम्मिलित व्यवस्था दस परिवार में समाधान, समृद्धि का अनुभव होना, प्रमाणित होना, गवाहित होना बन जाता है। यही परिवार समूह सभा का वैभव होना पाया जाता है। इस वैभव के साथ यह भी स्वयं स्फूर्त होता है इसकी विशालता की आवश्यकता है। जैसे परिवार में परिवार समूह व्यवस्था की प्रवृति स्वयं स्फूर्त होती है। इसी प्रकार परिवार समूह सभा ग्राम परिवार की विशालता दस के गुणन में होते हुए ग्राम सौभाग्य को प्रमाणित करने का उद्देश्य बन जाता है। क्योकि समूचे ग्राम में कम से कम 10 परिवार समूह सभा से निर्वाचित सदस्य होगी। दस परिवार सभा अपना सौभाग्य प्रमाणित किये रहना स्वाभाविक रहता है। इन आधारो पर हर परिवार समूह सभा से एक एक व्यक्ति का निर्वाचन होना सहज हो जाता है। इस स्वयं स्फूर्त निर्वाचन से जन प्रतिनिधि अपने दायित्व, कर्तव्य से सम्पन्न, सजग प्रमाणित रहता ही है क्योंकि समझदार परिवार से ही जन प्रतिनिधि की उपलब्धि होना पाया जाता है। इसके हर

चतुर्थ सोपान – ग्राम समूह परिवार सभा

परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था क्रम में चौथा सोपान ग्राम समूह सभा के रूप में प्रकट होना स्वाभाविक प्रक्रिया है। क्योंकि केवल परिवार व्यवस्था पर्याप्त नहीं है। सम्मिलित परिवार व्यवस्था आवश्यक है क्योंकि परिवार की सार्वभौमता सम्पूर्ण मानव के साथ जुड़ी हुई है। इसे प्रमाणित करने के लिए एक निश्चित क्रम आवश्यक है ही। चौथे सोपान में 10 ग्राम मोहल्ला परिवार सभाओ से एक-एक व्यक्ति निर्वाचित होकर एक ग्राम समूह परिवार सभा को गठित होना स्वाभाविक है। ये सभी निर्वाचित सदस्य अपने में तृतीय सोपानीय कार्यक्रमों में पारंगत होते हुए चौथे सोपान में अपनी-अपनी भागीदारी की पहचान प्रस्तुत करने के लिए प्रस्तुत हुए रहते है। इसमें दस गाँव के लिए शिक्षा संस्था

पांचवा सोपान – क्षेत्र परिवार सभा

पाँचवे सोपान में दस ग्राम समूह सभा से निर्वाचित दस सदस्य क्षेत्र परिवार सभा के रूप में पहचाने जायेगे। इसमें अनुभव की और भी मजबूती बनी रहेगी। समझदारी में परिपक्व होना स्वाभाविक है भागीदारी में गति और तीव्र होती जायेगी। इन ही सब सौभाग्य को एकत्रित होना क्षेत्र परिवार सभा अपने वैभव को प्रमाणित करने में समर्थ होगी।

छटवां सोपान – मंडल परिवार सभा

छठवाँ सोपान मंडल परिवार सभा का गठन दस क्षेत्र सभाओ से निर्वाचित दस सदस्यो के संयुक्त रूप में प्रभावित होगा। इसमें भी यथावत पाँच कड़ियो के रूप में सम्पूर्ण कार्य सम्पादित होंगे। शिक्षा-संस्कार कार्य स्नातक व स्नातकोत्तर रूप में प्रभावित रहेगी। स्नातकोत्तर शिक्षा-संस्कार में जीवन ज्ञान सहअस्तित्व दर्शन में पारंगत बनाने की व्यवस्था रहेगी। इसी के साथ साथ अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का सम्पूर्ण तकनीकी विज्ञान विवेक कर्माभ्यास सम्पन्न कराना बना रहता है। ऐसी संस्था में कार्यरत सारे अध्यापक संस्कार कार्यो के लिए जहाँ-जहाँ जरूरत पड़े वहाँ-वहाँ पहुँचेगे और कार्य सम्पन्न कराने के दायी रहेगे। उत्सव सभा मूल्याँकन प्रक्रिया सब ग्राम सभा सम्पन्न करेगी।

दूसरी कड़ी में न्याय-सुरक्षा अपने में एक वैभवशाली कार्यक्रम होना स्वाभाविक रहेगा। पीछे की पांचो कड़ियों में कोई समस्या शेष रहने की स्थिति में इस सोपान के निष्णात व्यक्ति उसे समाधान करने के दायी रहेगे। न्याय-सुरक्षा एक बहुमूल्य कार्यक्रम है यही विश्वास का, अभयता का प्रधान कार्यक्रम है। पूरे मंडल का न्याय-सुरक्षा विधा में जागृत रहना मंडल सभा का अति प्रमुख कार्य रहेगा। मंडल परिवार सभा की जितनी भी

समितियाँ होती है सभी सोपानीय सभाओ का न्याय सुरक्षा विधा का पूर्ण चित्रण, समीक्षा, मूल्याँकन कार्य सम्पादित होगा साथ में प्रस्ताव भी रहेगा। हर सीढ़ी के बाद दूसरी सीढ़ी के लिए आगे सीढ़ी से पीछे सीढ़ी के लिए, न्याय-सुरक्षा का प्रस्ताव बना रहना यह मानव अधिकार है। इसके आधार पर ही व्यवहारान्वय और मूल्याँकन होना स्वाभाविक है। न्याय-सुरक्षा सहअस्तित्व वादी विधि से सम्पन्न होना पाया जाता है। इसके लिए दूसरी कोई विधि भी नहीं है। मानवत्व अथवा मानवीयता सहअस्तित्ववादी विधि से प्रमाणित हो पाती है।

इसकी तीसरी कड़ी उत्पादन कार्य रहेगी। यह बड़े-बड़े उद्योगो के सम्बंध में सोच विचार करेगी। लघु उद्योग, ग्राम उद्योग, कुटीर उद्योग ग्राम शिल्प के मूल द्रव्यो को तैयार करने के सम्बंध में रहेगी। दूर श्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन, के यंत्र उपकरणो को निर्मित करने के भी साधारण प्रयास रहेगी।

चौथी कड़ी में विनिमय कोष कार्य सम्पादित होगा। मंडल परिवार सभा कोष से ग्राम परिवार सभा कोष तक का सम्बंध यथावत बना रहेगा। इसी प्रकार दूर संचार विधि से सभी कड़ियो का सम्बंध एक दूसरे से जुड़ा रहेगा। इसलिए सभी सोपान का अनुभव सुलभ रहता त्त

पांचवी कड़ी में स्वास्थ्य संयम का प्रबंधन रहेगा। पूरे मंडल के असाध्य घटनाग्रस्त स्थितियों से उभरने के लिए उपाय बना रहेगा। हर मानव स्वस्थ होने की उम्मीदो को लेकर जीता है। इससे स्वास्थ्य संयम कार्यक्रम में यह भी समाहित रहेगा जिसमें स्वायत्त विधि से स्वास्थ्य को संभाले रहने के ज्ञान, उपाय, कर्माभ्यास कराने की व्यवस्था रहेगी। इस प्रकार पॉचो कड़ियो का कार्य यथावत चिन्हित रहेगा इसी प्रकार आगे की कड़ियो में भी रहेगी।

सातवा सोपान – मंडल समूह परिवार सभा

मंडल समूह परिवार सभा दस मंडल परिवार सभा में से एक-एक व्यक्ति निर्वाचित होकर मंडल समूह परिवार सभा के कर्णधार रहेगें। इसी क्रम में सभी प्रकार के कार्यकलापो को तथा पांचों कड़ियो के कार्यक्रमों को इस सातवीं सोपान में प्रमाणित करने का दायित्व रहेगा इसमें सम्पूर्ण मानव प्रयोजनो को स्पष्ट रूप से प्रमाणित किया जाना कार्यक्रम रहेगा। ऐसे मानव अधिकार परिवार सभा से ही प्रमाणरूप में वैभवित होते हुए शनैः शनैः पुष्ट होते हुए मंडल समूह परिवार सभा में मानव अधिकार का सम्पूर्ण वैभव स्पष्ट होने की व्यवस्था

की विशालता को प्रमाणित करता ही जाता है। अपनी पहचान का आधार होना हर व्यक्ति पहचाने ही रहता है। समूचे अनुबंध समझदारी से व्यवस्था तक को प्रमाणित करने तक जुड़ा ही रहता है। प्रबंधन इन्ही तथ्यो में, से, के लिए होना स्वाभाविक है। समझदारी में परिपक्व व्यक्तियों का समावेश मंडल समूह सभा में होना स्वाभाविक है। ऐसे देव मानव दिव्य मानवता को प्रमाणित करते हुए दृढ़ता सम्पन्न विधि से शिक्षा विधा में शिक्षा-संस्कार कार्य को सम्पादित करते है।

शिक्षा-संस्कार एक प्रथम कड़ी है इसमें अति सूक्ष्मतम अध्ययन, शोध प्रबंधो को तैयार करने की व्यवस्था रहेगी। शोध प्रबंधो का मूल उद्देश्य मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि व्यवस्था को और मधुरिम सुलभ करना ही रहेगा। इसके लिए सारी सुविधाएँ जुटाने का कार्यक्रम मंडल समूह सभा बनाये रखेगा। इसका प्रबंधन मंडल सभा के जितने भी प्रौद्योगीकी रहेगी उसकी समृद्धि के आधार पर व्यवस्थित रहेगा। ऐसी व्यवस्था के तहत में और विशाल विशालतम रूप में व्यवस्था सूत्रों को सुगम बनाने का उपाय सदा-सदा शोध विधि से व्यवस्थापन रहेगा। ऐसे शोध कार्यो के लिए सामग्री मे सातो सीढ़ियों की गतिविधियाँ रहेगी इस प्रकार शोध प्रबंधन का स्रोत बनी रहेगी। ऐसे शोध प्रबंधन स्वाभाविक रूप में दसो सीढ़ी और पाँचो कड़ियो की समग्रता के साथ नजरिया बना रहेगा। इस विधि से मंडल समूह सभा की प्रथम कड़ी का लोक उपकारी और मानव उपकारी होने के रूप में प्रमाणित रहेगी। दूसरी कड़ी न्याय-सुरक्षा है। न्याय-सुरक्षा विधा में मंडल समूह परिवार सभा में पहुंचे हुए सभी विद्वान जागृत मानव कोटि के ही होंगे। जिनके अधिकार में न्याय सुरक्षा के लिए आवश्यकीय सभी दूर संचार उपलब्ध रहेगा ही। फलस्वरूप दस मंडलों में न्याय सुरक्षा विधा से जुड़कर न्याय सुरक्षा की स्थिति गति का पूरा आँकलन बना ही रहेगा। इसमे से मंडल परिवार सभा में कार्यरत न्याय सुरक्षा कार्य में कोई समस्या हो उसे पूर्णतया समाधान प्रस्तुत करने का कार्य करेगा। प्रधान रूप से पाँचो कड़ियो में एक तारतम्यता किये रहेगे। हर विद्वान जो परिवार सभा में भागीदारी करने के लिए प्रस्तुत होते है वे सब स्वायत्त परिवार के प्रतिनिधि के रूप में रहेगे। जहाँ तक दूर संचार तंत्र रहेगी वह सब मंडल समूह परिवार सभा के स्वायत्त में रहेगी। इसका प्रावधानीकरण मंडल परिवार सभा में कार्यरत या संचालित उत्पादन कार्य के चलते सम्पन्न

दस मंडल से प्रस्तुत होता है यह सब को समाधानित करेंगे।

तीसरी कड़ी उत्पादन कार्य होगी बड़े उद्योगो को यह परिवार सभा संचालित करेगी। जिससे सभी मंडलो की आवश्यकता पूरी होती रहे। जिससे गाँव-गाँव के लिए यान वाहन सब उपलब्ध हो सके। इसी क्रम में उत्पादन कार्य में शोध कर्माभ्यास की व्यवस्था बनी रहेगी। वर्तमान से आगे श्रेष्ठतम यान वाहन, दूर संचार तंत्र सम्बंधी यंत्रो को, उपकरणो को तैयार करने का कार्य करने के रूप में पहचाना जायेगा। जिससे देश धरती की आवश्यकता पूरी होती रहे। तकनीकी प्रक्रिया में जो मंडल समूह सभा अपने में श्रेष्ठता को पहचाने जायेगे उसे सभी सोपनीय सभाओ के लिए प्रस्तुत किये रहेगे। इसी प्रकार तकनीकी कर्माभ्यास का लोकव्यापीकरण करने की संभावना बनाए रखेगे।

चौथी कड़ी विनिमय कार्य के बाबत है। जो उत्पादन हुआ रहता है उसे विनिमय कोष में संग्रह किये रहेंगे। इसके बावजूद ग्राम परिवार सभा से सभी सोपानो में संचालित विनिमय कोष अनुबंधित रहेंगे। यह अनुबंधन अपने आप में सदा-सदा के लिए अर्थात पीढ़ी से पीढ़ी के लिए प्रशस्त और अनुकूल होने के रूप में उत्पादन कार्य को साज सजावट गुणवत्ता से परिपूर्ण विपुल मात्रा में उपलब्ध कराने की व्यवस्था किये रहेगें। सभी सोपानो के श्रम मूल्य के आधार पर, उपयोगिता के आधार पर वस्तु मूल्य, वस्तु मूल्य के आधार पर श्रम मूल्य का निर्धारण, मूल्यांकन, पहचान होता ही रहेगा इस विधि से श्रम मूल्य के आधार पर आदान प्रदान सुगम होना पाया जाता है।

पांचवी कड़ी स्वास्थ्य संयम होना स्वाभाविक है। स्वास्थ्य संयम के लिए शोध और कार्माभ्यास की व्यवस्था रहेगी। आवश्यकतानुसार शिक्षण प्रशिक्षण व्यवस्था रहेगी। घटनाग्रस्त दुर्घटनाग्रस्त असाध्य रोगियों की चिकित्सा कार्य सम्पन्न होने की व्यवस्था बनी रहेगी। यह ग्राम परिवार से संचालित स्वास्थ्य संयम समिति से अनुबंधित रहेगी। इस ढंग से पांचो कार्य समितियाँ सभी सोपानीय कार्य समितियों से सम्बन्धित रहेगें। और आवश्यकता अनुसार लेन-देन के लिए अनुबंधित रहेगें।

आठवां सोपान - मुख्य राज्य परिवार सभा

आठवीं सोपान में मुख्य राज्य सभा होगी। जिसके लिए मंडल समूह सभा से एक एक निर्वाचित सदस्य रहेगे। जिनके आधार पर समूचे कार्यकलाप सम्पन्न होगे। जिसमें पहली कड़ी शिक्षा-संस्कार कार्य की गतिविधियों में सर्वोत्कृष्ट समाज गति, सर्वोत्कृष्ट उत्पादन कार्य, सर्वोत्कृष्ट न्याय-सुरक्षा कार्य, सर्वोत्कृष्ट उत्पादन कार्य, सर्वोत्कृष्ट विनिमय कार्य गति और सर्वोत्कृष्ट स्वास्थ्य-संयम का शोध संयुक्त रूप में होता रहेगा। ये सभी सोपानीय परिवार सभाओ के लिए प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत होती रहेगी। इस विधि से अपनी

गरिमा सम्पन्न शिक्षण कार्य, कर्माभ्यास पूर्ण कार्यक्रम को सम्पन्न करता रहेगा।

दूसरी कड़ी न्याय-सुरक्षा यथावत रहेगी विशेषकर परस्पर सीढ़ियो के बीच विसंगतियों को समाधानित करती रहेगी। राज्य सुरक्षा के सम्बन्ध में शोध कार्य सम्पन्न होता रहेगा। ग्राम सुरक्षा से मुख्य राज्य सुरक्षा तक एक मधुरिम एक सूत्र विधियों को जाँचते रहेंगे। इन में मजबूती को बनाते रहेगे। साथ में मार्गदर्शन सभी सोपानो के साथ आदान प्रदान विधि से सम्पन्न होता रहेगा।

तीसरी कड़ी अपने आप में उत्पादन कार्य की रहेगी इसमें बड़े उद्योग समाहित रहेंगे प्रत्येक मुख्य राज्य में यातायात जैसे रेल सम्बंधी उपकरणो को प्राप्त करने का कार्यक्रम बना रहेगा। हर मुख्य राज्य परिवार सभा में इसकी परिपुष्टता को बनाये रखने की व्यवस्था रहेगी। जैसे बड़े बड़े वाहन इनको बनाने की प्रौद्योगिकी बनी रहेगी। इस क्रम में प्रत्येक राज्य सभा अपने में समृद्ध होने की व्यवस्था बनी रहेगी।

चौथी कड़ी विनिमय कोष होगी इसका आदान-प्रदान विनिमय कार्य को मुख्य राज्य परिवार सभा सम्पन्न करेगी। इसमें सभी आदान-प्रदान व्यवस्था विनिमय प्रक्रिया में ही समाहित रहेगी। इसमें सन्तुष्टि बिन्दु यही है कि सर्वाधिक उत्पादन हो जो आवश्यकता से अधिक हो, आवश्यकता का आंकलन सभी सोपानीय व्यवस्था में संबंध अनुबंध से पहचानने की व्यवस्था रहेगी।

पांचवी कड़ी स्वास्थ्य-संयम रहेगी प्रधान रूप में प्रौद्योगिकी में कार्य करने वालो के लिए बना ही रहेगा। उनके साथ अन्य सभाओ के द्वारा आये हुए स्वास्थ्य संयम समस्या ग्रस्त व्यक्तियों को राहत प्रदान करेगी। स्वास्थ्य संयम कार्यक्रम का पूरे परिवार के सम्मिलित कार्यक्रम को साधनो की पूर्ति उत्पादन कार्यो से सम्पन्न होने की व्यवस्था रहेगी। इस क्रम में सम्पूर्ण व्यवस्था का वैभव मानव के लिए अतिप्रयोजनशील होना देखा गया है एवं समझ में आता है।

नवां सोपान - प्रधान राज्य परिवार सभा

नवें सोपान में प्रधान राज्य सभा होगी यह दस निर्वाचित सदस्यों से गठित होगी। यह दस सदस्य दस मुख्य राज्य परिवार सभा में कार्यरत दस-दस सदस्यो में से एक-एक व्यक्ति निर्वाचित किये जाने की विधि से उपलब्ध रहेगी। इसमें ऐसे पारंगत विद्वान होने के आधार पर प्रधान राज्य सभा का गठन गरिमामय होना स्वाभाविक है। इस सभा गठन कार्य के लिए जितने भी साधनो की आवश्यकता रहती है दस मुख्य राज्य सभाओं के द्वारा संचालित उद्योगो के आधार पर प्रावधानित रहेगी। ये सभी प्रावधान अपने आप में

लोकार्पण विधि से संपादित रहेगी। दूरसंचार व्यवस्था भी इन्ही स्त्रोतो से समावेशित रहेगी। फलस्वरूप प्रधान राज्य सभा की गति सुस्पष्ट रहेगी अथवा आवश्यकता अनुसार रहेगी।

इस सभा की पहली कड़ी शिक्षा-संस्कार ही रहेगी। प्रधान राज्य परिवार सभा से संचालित शिक्षा समूचे दसो मुख्य राज्यो की संस्कृति, सभ्यता, विधि व्यवस्था की सार्थकता और समग्र व्यवस्था की सार्थकता के आँकलन पर आधारित श्रेष्ठता और श्रेष्ठता के लिए अनुसंधान, शोध, शिक्षण, प्रशिक्षण, कर्माभ्यासपूर्वक रहेगी। प्रौद्योगिकी विधा का कर्माभ्यास प्रधान रहेगा। व्यवहार अभ्यास प्रक्रिया में प्रमाणीकरण प्रधान रहेगा। इस प्रकार यह उन सभी जनप्रतिनिधियो के लिए प्रेरणादायी शिक्षा व्यवस्था रहेगी और लोकव्यापीकरण करने के नजरिये से चित्रित करने की प्रवृत्ति रहेगी। इसी मानवीय शिक्षा कार्यक्रम में साहित्य कला की श्रेष्ठता के संबंध में प्रयोजन के अर्थ में मूल्यांकन रहेगी। श्रेष्ठता प्रबंध, निबंध, कला प्रदर्शन, साहित्य, मूर्ति कला, चित्रकलाओं के आधार पर मूल्यांकन और सम्मान करने की व्यवस्था रहेगी।

इस सभा की दूसरी कड़ी न्याय- सुरक्षा कार्य रहेगी इसे पड़ोसी राज्यो में अर्थात परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था को पड़ोसी राज्यो मे प्रवाहित करने के लिए सभी उपायो का प्रयोग करेगी। इस विधि से लोकव्यापीकरण प्रवृत्ति का प्रमाण प्रधान राज्य सभा के दायित्व मे रहेगी।

इस सभा की तीसरी कड़ी उत्पादन कार्य रहेगी जो आकाश गमन आदि यंत्रो को तैयार करने की प्रौद्योगिकी बनाये रखेगी। साथ में जलप्रवाह बल से विद्युत उपार्जन कार्य सम्पादित करने की व्यवस्था और दायित्व रहेगी। इसी के साथ साथ वायु प्रवाह, समुद्र तरंग विधियों से भी विद्युत उपार्जन करने के उपक्रम समावेशित रहेगें। इसी प्रौद्योगिकी कार्यक्रम के साथ और श्रेष्ठतर उपलब्धियो के लिए प्रयोगशील रहने के अधिकार समावेशित रहेगे जिससे ऊर्जा संतुलन सुलभ हो।

इस समिति की चौथी कड़ी विनिमय कोष रहेगी। विनिमय कोष के अधिकार सम्पूर्ण यंत्र उपकरणो का संग्रह उनका विधिवत विनिमय करने का अधिकार रहेगा। इसी कोष के चलते और प्रगतिशीलता को पहचानने की अनुसंधान, शोध अवश्य सम्पादित होती रहेगी।

इस सभा की पॉचवी कड़ी स्वास्थ्य संयम होगी। इसमें प्रौद्योगिकी में कार्यरत व्यक्तियों की चिकित्सा सम्पन्न होगा। इसके अतिरिक्त किसी भी सोपानीय प्रस्तुत कोई

घटनाग्रस्त समस्या को और असाध्य रोगो को समाधानित करने का प्रबंधन रहेगा। इसी प्रकार प्रधान राज्य सभा का वैभव सार्थक होने का स्वरूप स्पष्ट होता है।

दसवां सोपान - विश्व राज्य परिवार सभा

दसवीं सोपान विश्व परिवार राज्य सभा है। सभी प्रधान राज्य सभाएं निर्वाचित प्रतिनिधियों को प्रस्तुत किए रहते हैं। ऐसे दस प्रतिनिधि विश्व राज्य सभा में होंगे। इस कार्य में इस धरती पर आज की स्थिति में दस प्रधान राज्य सभा होना संभव नहीं है। इसलिए मंडल समूह या मुख्य राज्य सभाएँ जो और सदस्यो को देना चाहते हैं उनसे दस का पूरा खाका बना लेना होगा। विश्व राज्य सभायें दस जन प्रतिनिधि कार्य संचालन करेंगे।

इस सभा की पहली कड़ी शिक्षा संस्कार कार्य रहेगी। शिक्षा संस्कार कार्य में प्राकृतिक संतुलन, (उद्योंग वन व खनिज) जीव संतुलन, मानव न्याय संतुलन का कार्य सम्पादित होगा। साथ में जलवायु संतुलन, ऋतु संतुलन, धरती का संतुलन, वन खनिज का संतुलन सम्बंधी अध्ययन करने की व्यवस्था रहेगी। ऐसे अध्ययन के लिए किसी भी सोपानीय सभा के सीमा में किसी भी व्यक्ति को भेज सकते हैं विद्वान बना सकते हैं और लोकव्यापीकरण के लिए प्रावधानित कर सकते है।

इस सभा की दूसरी कड़ी न्याय सुरक्षा है। न्याय सुरक्षा में सर्वाधिक रूप में मानव न्याय अथवा समाज न्याय, लोककल्याण कार्यो में श्रेष्ठता गति और सन्तुष्टि का आँकलन करना रहेगा। उसमें से किसी भी श्रेष्ठता की, गति की आवश्यकता है उसके लिए समुचित मार्गदर्शन करना इस सभा का अधिकार रहेगा। इसी के साथ साथ प्राकृतिक संतुलन, जीव संतुलन, वनस्पति संतुलन, खनिज संतुलन, ऋतु संतुलन के सम्बंध में समुचित मार्गदर्शन को प्रस्तुत करना, अध्ययन योग्य विधि से स्वस्थ रखने के लिए सर्वाधिक ध्यान देना उसके लिए समुचित मार्गदर्शन अध्ययन विधि से प्रस्तुत करना रहेगा।

इस सभा की तीसरी कड़ी उत्पादन-कार्य है। उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनशीलता का मूल्याँकन करना सभी सोपानीय उत्पादनो के सम्बन्ध में पूर्णतया सजग रहना सन्तुलन वस्तु उत्पादन के लिए प्रधान राज्य सभाओ का मार्ग दर्शन देना बना रहेगा। इस सभा के सम्पूर्ण साधनो को मुख्य राज्य सभाओ के जो मुख्य प्रौद्योगिकी रहेगी उसी के बलबूते पर पूरा साधन एकत्रित रहेगा। साधनो के सदुपयोग का चित्रण, प्रेरणा देने का अधिकार इस सभा मे निहित रहेगा। आरंभिक स्थिति में आवश्यक समझने पर सामरिक तंत्रो का उत्पादन प्रौद्योगिकीय विधि से विश्व राज्य सभा में रहेगा। उसके लिए स्रोत सभी प्रधान राज्य सभाएँ है। सभी आवश्यक तकनीकी प्रचलित हो चुकी है। इस

विश्व राज्य सभा में एक विश्व सुरक्षा समिति बनी रहेगी। इसमे सभी प्रधान राज्य सभा के एक एक प्रतिनिधि निर्वाचित विधि से प्रस्तुत रहेगे।

जहाँ तक सामरिक तंत्र के लिए आवश्यक है इसकी आवश्यकता तब तक रहेगी जब तक परस्पर राज्यो में पूर्ण विश्वास एकरूपता का सेतु न बन जाये। इस विधा में निश्चयन यही है समझदारी के साथ परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सार्थक रहेगी। थोड़े दिन उपरान्त मानव कुल मे सामरिक उत्पादन सर्वथा अयोग्य सिद्ध होकर रहेगा।

यह भी एक परिकल्पना मानव कुल कर सकता है कि दूसरे किसी पृथ्वी से इस पृथ्वी पर आक्रमण करने का भ्रम हो सकता है। इसमें कही भी मानव हो, शनैः शनैः जागृत होते हुए जागृतिपूर्ण विधि से समग्र व्यवस्था को पहचानने का मुहूर्त हर पृथ्वी पर उदय होता ही है। क्योंकि पूरी प्रक्रिया इस धरती पर जैसी गुजर चुकी है उसे देखने पर अनुमान यही होता है किसी पृथ्वी पर भिन्न जलवायु मे मानव कुल का विस्तार होते-होते पूरी उस पृथ्वी का ज्ञान होना उसका भौगोलिक और जलवायु सम्बन्धी स्वरूप समझ मे आना विभिन्न जलवायु से दूरसंचार जुड़ना, ये सब शनैः शनैः गतिशील सोच-विचार का परिणाम होता रहेगा। ऐसी संभावना के चलते अन्ततोगत्वा जागृति पूर्ण विधि को तलाशना होता है।

जागृति पूर्ण विधि को तलाशने के उपरान्त सदा-सदा से बनी हुई इतिहास जुड़ी हुई मिलती है और जागृति के उपरान्त व्यवस्था का सूझबूझ होना मानव कुल की ही प्रतिष्ठा है। मानसिकता के आधार पर जागृति को विकसित करने वाला, पहचानने, जानने, मानने, प्रमाणित करने वाला एक मात्र मानव ही है।

हर जलवायु में विभिन्न प्रकार के आदमी होते है अर्थात मानव शरीर का रचना विभिन्न नस्ल, रंग, रूप का होता है। यह बात इसी धरती पर गवाहित हो चुकी है। इसी प्रकार अन्य धरती पर भी हो सकती है। जागृति की महिमा सार्वभौम व्यवस्था अखंड समाज का प्रमाण किसी अन्य धरती अथवा अनंत धरती में भी मानव का उदय हो चुका हो, उन सबका स्वरूप एक ही हो जाता है यानि मानसिक स्वरूप, क्योंकि उद्देश्य एक ही बनता है। दृष्टा कर्ता भोक्ता पद निश्चित हो जाता है। इन तथ्यो से हमे विदित होता है हम मानव लक्ष्य सम्पन्न विधि से जीने के लिए जागृति एक मात्र सहारा है। मानव जागृति सहित सहअस्तित्व रूप में नित्य वर्तमान है ही। वर्तमानता सदा-सदा के लिए नित्य है। इस विधि से हम सर्वशुभ कल्पना, परिकल्पना और प्रमाण तक की स्थिति मे आते है कि परिवार मूलक स्वराज्य विधि से विश्व मानव परिवार सभा को अभी तक वैभवित न होते हुए, वैभवित होने की संभावना मानव मन तक पहुंचता है। सम्भावना तक स्वीकृति होती है। आगे मानव की चाहत बलवती होने की स्थिति मे व्यवहार मे वर्तमान हो सकता है यही आवश्यकता हर मानव मे विद्यमान है।

चौथी कड़ी विनिमय कोष है विश्व राज्य परिवार सभा मे विनिमय के लिए कोई खास वस्तुएँ नहीं रह जाते है। आवश्यकता महसूस होने की स्थिति मे विश्व मानव के लिए उपयोगी वस्तु को प्रस्तुत करेगा। इसकी सम्भावना दूरगमन, दूरदर्शन, दूरश्रवण सम्बन्धी वस्तुओ मे परिष्कृति और गति हो सकती है। विश्व मानव परिवार सभा की गरिमा के अनुसार ज्यादा से ज्यादा ऊर्जा संतुलन सम्बन्धी औजारो के ऊपर ध्यान देने की आवश्यकता है। विद्युत ऊर्जा, विकरणीय ऊर्जा यह दो प्रकार की ऊर्जाएँ अति महत्वपूर्ण

है इनमे से विकरणीय ऊर्जा पर संतुलन का नजरिया विश्व मानव परिवार सभा मे सुस्पष्ट रहने की आवश्यकता है। इसको कारगर बनाए रखना अर्थात सर्वसुलभ करने योग्य ज्ञान विवेक विज्ञान कर्माभ्यास सम्पन्नता को बनाए रखना है किसी भी सोपानीय आवश्यकता पड़ने पर शिक्षा शिक्षण की कर्माभ्यास की व्यवस्था को बनाए रखेगे। यही विनिमय का प्रधान स्वरूप रहेगा। यह विश्व मानव परिवार सभा का महिमा मंडित स्थितियो के लिए अनुकूल है।

पांचवी कड़ी स्वास्थ्य संयम ही होता है। इस अंतिम सोपान में सर्वोत्कृष्ट स्वास्थ्य संयम मे स्वायत्त रहने के लिए सर्वोत्कृष्ट विधियों को शोध पूर्वक कर्माभ्यास किए रहना आवश्यक है महिमा अनुसार अपेक्षा भी मानव कुल मे होना स्वाभाविक है। इस आधार पर ऐसी स्थिति मे जो अनुसंधान होगा विश्व मानव के लिए उपकार में रहेगा। इस प्रकार विश्व मानव परिवार सभा मे सर्वोत्कृष्ट स्वास्थ का नजीर बना ही रहेगा यह लोकव्यापीकरण होने की व्यवस्था बनी रहेगी।

उक्त प्रकार से दस सोपानीय पाँच-पाँच कड़ियो पर सुसंगठित रहना सामान्य नजरिया से समझ मे आता है। इस सुसंगठन का तालमेल दूरसंचार विधि से एक दूसरे कड़ियो के साथ अनुप्राणित प्रतिप्राणित रहेगा। अनुप्राणित का तात्पर्य अनुक्रम से प्रेरणाएँ सूचनाएँ पहुंच पाना, सत्यताएँ सूचित हो पाना। प्रतिप्राणित का तात्पर्य प्राप्त सूचना के अनुसार अपेक्षित परिणामो से अवगत होना। ऐसी अनुप्राणित प्रतिप्राणित क्रियाएँ ग्राम परिवार राज्य सभा से विश्व परिवार सभा तक, विश्व परिवार सभा से ग्राम मोहल्ला परिवार सभा तक वर्तने की व्यवस्था बनी रहेगी।

इस विधि से हम मानव सामुदायिक मानसिकता से ओढ़े हुए सारी अपराधिक

प्रवृत्तियों से मुक्त हो सकते हैं। सामुदायिक चेतना विधि से ही द्रोह-विद्रोह शोषण युक्त प्रचलन जैसे अभिशाप, प्रदूषण जैसे अभिशाप इन दोनों से उबर सकते हैं। फलस्वरूप मिलावट जैसे अभिशाप, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार जैसे अभिशापों से मुक्त हो पाते हैं। संग्रह-सुविधा-भोग-अतिभोग की मानसिकता से परिवर्तित होकर जागृत होकर समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व उपयोग-सदुपयोग प्रयोजनशील होने के प्रमाणो को मानवकुल प्रमाणित कर सकता है। यही शांति पूर्ण, समाधान पूर्ण जिन्दगी का प्रमाण है।

भूमि स्वर्गताम् यातु, मनुष्यो यातु देवताम्।
धर्मो सफलताम् यातु, नित्यं यातु शुभोदयम्॥

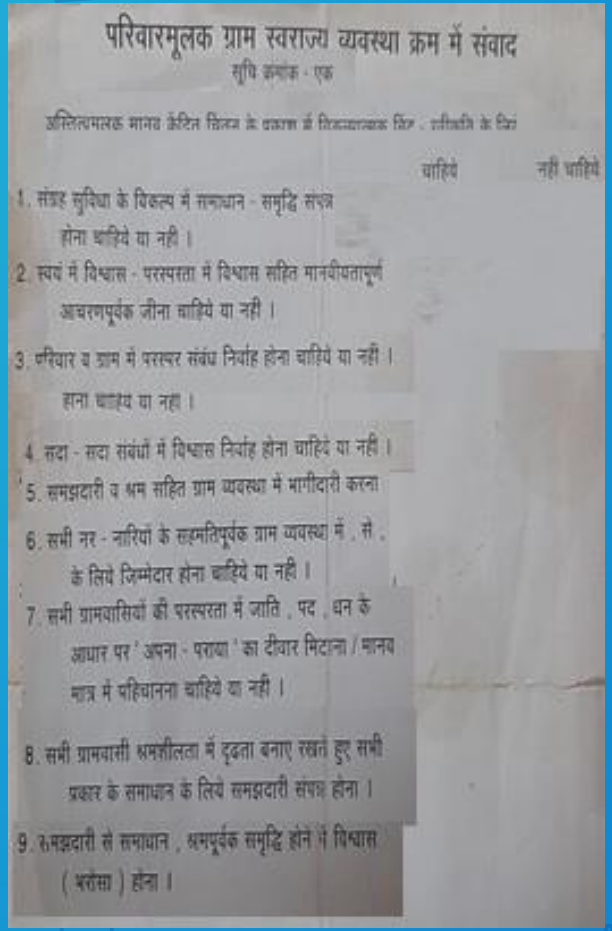

परिवारमूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था क्रम में संवाद

सूचि क्रमांक - एक

अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन के प्रकाश में [illegible]

चाहिये नहीं चाहिये

1. संग्रह सुविधा के विकल्प में समाधान - समृद्धि संपन्न होना चाहिये या नहीं ।
2. स्वयं में विश्वास - परस्परता में विश्वास सहित मानवीयतापूर्ण आचरणपूर्वक जीना चाहिये या नहीं ।
3. परिवार व ग्राम में परस्पर संबंध निर्वाह होना चाहिये या नहीं । होना चाहिये या नहीं ।
4. सदा - सदा संबंधों में विश्वास निर्वाह होना चाहिये या नहीं ।
5. समझदारी व श्रम सहित ग्राम व्यवस्था में भागीदारी करना
6. सभी नर - नारियों के सहमतिपूर्वक ग्राम व्यवस्था में , से , के लिये जिम्मेदार होना चाहिये या नहीं ।
7. सभी ग्रामवासियों की परस्परता में जाति , पद , धन के आधार पर ' अपना - पराया ' का दीवार मिटाना / मानव मात्र में पहिचानना चाहिये या नहीं ।
8. सभी ग्रामवासी श्रमशीलता में दृढता बनाए रखते हुए सभी प्रकार के समाधान के लिये समझदारी संपन्न होना ।
9. समझदारी से समाधान , श्रमपूर्वक समृद्धि होने में विश्वास (भरोसा) होना ।

आभार

धन्यवाद !

- शोध प्रस्तुतकर्ता - श्रीमान योगेश, अभ्युदय संस्थान , अछोटी (छत्तीसगढ़)
- सहयोग - श्रीमान गोपाल, अभ्युदय संस्थान , अछोटी (छत्तीसगढ़)